ज्येष्ठ अमावस्या व्रत कथा PDF

एक प्राचीन कथा के अनुसार जब महर्षि दधीचि की मृत्यु हो गई थी और उनकी मृत्यु के पश्चात पिंडदान किया जा रहा था तो उनकी विधवा पत्नी उनका वियोग सहन नहीं कर सकी और अपने 3 साल के बच्चे को पीपल के पेड़ के पास छोड़कर खुद सती हो जाती है। कुछ समय के पश्चात भूख प्यास की वजह से बच्चा पीपल के पेड़ के नीचे बैठकर रोने लगता है और भूख की वजह से वह पीपल के पेड़ के नीचे पड़े हुए फल को खा लेता है और उस पेड़ के फल को खाते–खाते वह बड़ा होने लगा।

कुछ समय पश्चात महर्षि नारद मुनि वहां से गुजर रहे थे और उन्होंने उस बालक को वहां देख कर उस बालक से उसका परिचय पूछा बालक ने महर्षि नारद मुनि के सवाल का जवाब देते हुए कहा कि मैं खुद नहीं जानता कि मैं कौन हूं। कुछ समय बच्चे को ध्यान से देखने के पश्चात महर्षि नारद मुनि जी ने बताया तुम पुत्र हो महर्षि दधीचि के।

और उन्हीं की अस्थियों का वज्र बनाने के बाद देवताओं ने असुरों पर जीत हासिल की मुनि जी ने बताया की उसके पिता की मृत्यु 30 साल की उम्र में ही हो गई थी जब बालक ने मुनि जी से अपने पिता की मृत्यु का कारण पूछा तो महर्षि नारद मुनि ने बताया कि उनके पिता पर शनि देव जी की महादशा थी और यह बात कहने के पश्चात महर्षि जी ने बालक का नाम पिप्लाद रख दिया और उसे अपने अंतर्गत शिक्षण देना शुरू कर दिया।

कुछ समय के बाद जब बच्चा बड़ा हुआ तो उसने ब्रह्मा विष्णु जी की घोर तपस्या की ब्रह्मा और विष्णु जी की घोर तपस्या करने के पश्चात पिप्पलाद की तपस्या से ब्रह्मा जी प्रसन्न हुए और उन्होंने उससे वरदान मांगने को कहा पिप्पलाद ने उसके देखने मात्र से जला देने की शक्ति मांगी जैसे ही उसको यह शक्ति प्राप्त हुई तो उसने शनिदेव जी का आह्वान किया और जैसे ही शनिदेव उसके सामने प्रकट होते हैं वह अपनी आंखों के द्वारा शनिदेव जी को जलाना प्रारंभ कर देता है शनि देव जी का शरीर जलने लगता है जब सभी देवी देवताओं ने शनिदेव जी को जलते हुए देखा तो सभी ने शनिदेव जी को बचाने का प्रयत्न किया परंतु सभी असफल रहे।

उसके बाद देवताओं ने जब ब्रह्मा जी से प्रार्थना की तो ब्रह्मा जी स्वयं पिप्पलाद के सामने आए और शनि देव को छोड़ने के बदले में उससे दो वरदान मांगने को कहा तो पिप्पलाद ने पहले वरदान में मांगा कि किसी भी 5 वर्ष से कम उम्र के बच्चे की कुंडली में शनि देव का प्रभाव ना रहे कोई भी बच्चा शनिदेव की महादशा के कारण अनाथ ना हो क्योंकि पिप्पलाद की कुंडली में भी शनि की दशा थी इसलिए पिप्पलाद बचपन में ही अनाथ हो गया था।

pdfbox.com

उसने दूसरे वरदान में मांगा की जो भी व्यक्ति सूर्योदय से पहले अमावस्या के दिन पीपल के वृक्ष को अधैर्य देगा उस व्यक्ति पर शनि देव का कोई भी बुरा प्रभाव नहीं पड़ना चाहिए ब्रह्मा जी ने यह दोनों वरदान पिप्पलाद को प्रदान किये और इसके पश्चात उसने शनिदेव जी को छोड़ दिया उसी दिन से ज्येष्ठ अमावस्या के दिन पीपल की पूजा का प्रावधान है और इसकी पूजा करने से संपूर्ण सुखों की प्राप्ति होती है।

pdfinbox.com

pdfinbox.com